सागर में जहरीली शराब से मौतें, कांग्रेस का प्रदर्शन

- बम्हौरी में स्वास्थ्य मंत्री का पुतला दहन
- पीड़ित परिवारों को 1-1 करोड़ रुपये देने की मांग

नवभारत न्यूज

बम्हौरी, 9 सितंबर. सागर जिले के बंडा क्षेत्र में कथित रूप से जहरीली शराब के सेवन से हुई लोगों की मौतों के मामले को लेकर कांग्रेस ने विरोध प्रदर्शन किया. रायसेन जिले के बम्हौरी कस्बे में कांग्रेस कार्यकर्ता सड़कों पर उतरे और सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए उपमुख्यमंत्री और स्वास्थ्य राजेन्द्र शुक्ला का पुतला दहन किया.

प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने मामले में जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की. कांग्रेस नेताओं का आरोप है कि जहरीली शराब की घटना के कारण कई परिवारों ने अपने परिजनों को खो दिया है. उन्होंने पूरे मामले की निष्पक्ष एवं उच्चस्तरीय जांच कर दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई किए जाने की मांग उठाई. कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन के दौरान मृतकों के परिजनों को न्याय दिलाने के साथ ही प्रत्येक पीड़ित परिवार को एक-एक करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता देने की मांग की. हाथों में तख्तियां लेकर कार्यकर्ताओं ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और घटना को लेकर अपना विरोध दर्ज कराया.

प्रदर्शन में वरिष्ठ कांग्रेस नेता मदन नेमा , युवा कांग्रेस विधानसभा अध्यक्ष विश्वनाथ पटेल, ब्लॉक अध्यक्ष टीकम पटेल, मोंद्र पुरी गोस्वामी ,सुनील नेमा, एसी-एसटी जिला अध्यक्ष बाबू रजक, तारकेश्वर शर्मा, आधार कुकरैया, विक्की पटेल, पवन सोनी, दुर्गेश लोधी, राम सिंह लोधी, मनोज पटेल, नवीन लोधी, मंसूर खान, लखन पटेल, राजकुमार लोधी, दीनदयाल लोधी, हेमंत सोलकिया, दिगंबर पटेल, अखलेश सोनी, नरेंद्र गौर, पवन चौधरी, सहित अन्य कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे.

नेशनल लोक अदालत 12 सितंबर को, प्रचार वाहन किया रवाना

प्रथम जिला न्यायाधीश ने वाहनों को दिखाई हरी झंडी

नवभारत न्यूज

बेगमगंज, 9 सितंबर. राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं मध्य प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश अनिल कुमार सुहाने रायसेन के मार्गदर्शन में तहसील विधिक सेवा समिति बेगमगंज के द्वारा न्यायालय परिसर बेगमगंज में 12 सितंबर को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है.

नेशनल लोक अदालत के प्रचारप्रसार के लिए बुधवार को प्रथम जिला न्यायाधीश /अध्यक्ष तहसील विधिक सेवा समिति सविता ओगले ने प्रचार वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया.

इस अवसर पर न्यायिक मजिस्ट्रेट अन्ना ग्लोरी माहेश्वरी, अधिवक्ता संघ अध्यक्ष संतोष बुंदेला, मप्र विद्युत वितरण कंपनी सहायक यंत्री नीरज गुप्ता, सीएमओ राजेंद्र शर्मा, उपनिरीक्षक तरुण भास्कर सहित बड़ी संख्या में अधिवक्तागण मौजूद थे. प्रथम जिला न्यायाधीश सविता ओगले ने बताया कि नेशनल लोक अदालत में लंबित राजीनामा योग्य आपराधिक प्रकरण, मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण के क्लेम प्रकरण, भरण पोषण, घरेलू हिंसा, पारिवारिक मामले, अपराधिक सिविल राजीनामा योग अपील, श्रम, विद्युत प्रकरण एवं समस्त दीवानी मामले रखे जा रहे हैं. नेशनल लोक अदालत में नगर पालिका के जलकर वसूली एवं संपत्तिकर वसूली के प्रकरण एवं समस्त बैंकों के प्रिलिटिगेशन प्रकरणो का निराकरण आपसी सहमति से किए जाएंगे.

सांची बौद्ध विवि में शतरंज व स्वास्थ्य शिविर शुरू

नवभारत न्यूज

सलामतपुर, 9 सितंबर. सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में शतरंज और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक 15 दिवसीय विशेष प्रशिक्षण शिविर का आगाज हुआ.

इस आयोजन के माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को शतरंज के दांव-पेच सिखाने के साथ-साथ जीवनभर स्वस्थ रहने की कला भी सिखाई जा रही है. शिविर के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव एवं सहायक निदेशक (खेल) विवेक पाण्डेय ने कहा, 'स्वास्थ्य जीवन का सबसे बड़ा वरदान है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सबसे पहले अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए. शिविर में प्रतिभागियों को स्वस्थ जीवनशैली के विभिन्न पहलुओं जैसे जिम, साधारण कसरत, योग, पैदल चलना, तैरना और जॉगिंग के बीच का अंतर समझाया गया. छात्रों को विस्तार से बताया गया कि किस प्रकार की एक्सरसाइज में सबसे अधिक कैलोरी बर्न होती है. कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित लोगों ने प्रतिदिन नियमित रूप से व्यायाम करने का संकल्प लिया.

बिजली कंपनी के शिविर में समस्याओं का निराकरण

12 पात्र हितग्राहियों को मात्र 5 रुपये में जारी किए नए बिजली कनेक्शन

नवभारत न्यूज

सलामतपुर, 9 सितंबर. मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा सलामतपुर कस्बे में बुधवार को बिजली सेवा शिविर का आयोजन किया गया. इस शिविर का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को उनकी बिजली संबंधी समस्याओं का स्थानीय स्तर पर ही समाधान उपलब्ध कराना और उन्हें राहत देना है.

शिविर में विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारियों और कर्मचारियों ने उपभोक्ताओं की विभिन्न शिकायतों और मांगों का मौके पर ही त्वरित निराकरण किया. प्राप्त जानकारी के अनुसार शिविर में कुल 46 आवेदन आए, जिनमें से बिजली बिल में गड़बड़ी की 5 शिकायतें, नाम परिवर्तन, लोड वृद्धि/परिवर्तन के 3 मामले और विद्युत सप्लाई से जुड़ी 5 शिकायतों का तत्काल समाधान किया गया. इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार की योजना के तहत 12 पात्र हितग्राहियों को मात्र 5 रुपये में नवीन बिजली कनेक्शन जारी किए गए.

शिविर के दौरान कई उपभोक्ताओं ने बकाया और चालू बिजली बिलों का भुगतान भी किया. अधिकारियों द्वारा उपस्थित लोगों को ऑनलाइन बिल भुगतान, समय पर बिल जमा करने के फायदे और शिकायत निवारण की डिजिटल प्रक्रियाओं के बारे में जागरूक किया गया. सहायक यंत्री मनीष कुमार ने बताया कि इस प्रकार के अभियानों से उपभोक्ताओं को विद्युत कार्यालयों के बार-बार चक्कर लगाने से मुक्ति मिल रही है. शिविर में सहायक यंत्री मनीष कुमार सहित विद्युत विभाग की पूरी टीम उपस्थित रही. कंपनी का यह संपर्क अभियान आगे भी आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में जारी रहेगा, ताकि हर उपभोक्ता को उनके द्वार पर ही निर्बाध सेवा मिल सके.

बैठक में संगठन के विस्तार को लेकर लिए महत्वपूर्ण संकल्प

अंतरराष्ट्रीय बजरंगदल की सोजनी धाम में हुई प्रांत बैठक

नवभारत न्यूज

सिलवानी, 9 सितंबर. अंतरराष्ट्रीय बजरंगदल की प्रांत बैठक प्रसिद्ध सोजनी धाम मंदिर में आयोजित की गई. बैठक में संगठन के विस्तारित जिलों रायसेन, सागर, भोजपुर एवं बरेली के प्रमुख दायित्वों की घोषणाएं की गई.

बैठक में प्रांतीय विभागीय अधिकारियों में प्रांत मंत्री राजू भार्गव, प्रांत संयोजक संजय खरे, विभाग मंत्री अरविंद खरे तथा विभाग अध्यक्ष गोलू मालवीय विशेष रूप से उपस्थित रहे.

बैठक का शुभारंभ सामूहिक सीताराम नामजप एवं हनुमान चालीसा के पाठ से हुआ. इसके उपरांत प्रांत एवं विभाग के पदाधिकारियों ने संगठन की कार्ययोजना और आगामी गतिविधियों को लेकर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया. प्रांत संयोजक संजय खरे ने संगठन को और अधिक सशक्त बनाने के उद्देश्य से सभी कार्यकर्ताओं को सामूहिक संकल्प दिलाया.

उन्होंने प्रत्येक कार्यकर्ता से कम से कम 20 नए सक्रिय कार्यकर्ता जोड़ने का आह्वान किया तथा 200 नए गांवों में संगठन के विस्तार का लक्ष्य निर्धारित किया.

बैठक में आगामी वार्षिक उत्सव के अंतर्गत डाबरी से सुनवाहा झंडा यात्रा को भव्य रूप से आयोजित करने का निर्णय लिया गया. इसके लिए यात्रा में 5,000 श्रद्धालुओं एवं कार्यकर्ताओं की सहभागिता सुनिश्चित करने की योजना बनाई गई. बैठक का समापन संगठन की मजबूती, विस्तार एवं सामाजिक समरसता के संकल्प के साथ हुआ.

जनपद पंचायत बाड़ी में बीएलसी बैठक आयोजित

एनआरएलएम के लक्ष्यों के अनुरूप कार्य करने तथा बैंक लिंकेज में तेजी लाने पर जोर

नवभारत न्यूज

बाड़ी, 9 सितंबर. जनपद पंचायत बाड़ी में बुधवार को ब्लॉक स्तरीय बैंकर्स समिति (बीएलसी) की बैठक आयोजित की गई. बैठक में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के अंतर्गत संचालित योजनाओं एवं बैंकिंग गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा की गई.

बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी दानिश अहमद खान द्वारा क्षेत्र की समस्त बैंक शाखाओं को एनआरएलएम के निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप कार्य करने के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश एवं जानकारी दी गई. विशेष रूप से स्व-सहायता समूहों को बैंकिंग सुविधाओं से जोड़ने, बैंक लिंकेज बढ़ाने, ऋण प्रकरणों का समयबद्ध निराकरण करने तथा पात्र हितग्राहियों को शासन की योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया. बैठक में बैंक शाखाओं के प्रतिनिधियों के साथ एनआरएलएम से संबंधित ऋण प्रकरणों एवं स्व-सहायता समूहों की वित्तीय सहायता से जुड़े कार्यों की प्रगति पर चर्चा की गई.

श्री सियावास हिंदू उत्सव समिति की नई कार्यकारिणी घोषित

24 उपाध्यक्ष, 50 मंत्री सहित 300 सदस्य शामिल

नवभारत न्यूज

बेगमगंज, 9 सितंबर. श्री सियावास हिंदू उत्सव समिति की आवश्यक बैठक आहूत की गई. बैठक में श्री सियावास हिंदू उत्सव समिति के अध्यक्ष सचिन नेमा ने आगामी वर्ष के लिए नई कार्यकारिणी के गठन की घोषणा की.

नई कार्यकारिणी में सदस्यों को जिम्मेदारियां सौंपी गईं. महामंत्री राजेंद्र सोलंकी एवं लोकेंद्र लोधी, कोषाध्यक्ष अभिषेक निखरा एवं मनोज सोनी को बनाया गया जबकि 24 उपाध्यक्ष एवं 50 मंत्री एवं संगठन मंत्रियों सहित परामर्शदात्री मंडल, विधिक सलाहकार और अन्य दायित्वों के लिए कुल 300 से अधिक सदस्यों को कार्यकारिणी में शामिल किया गया. समिति अध्यक्ष नेमा ने बताया कि समिति का मुख्य उद्देश्य नगर में धार्मिक उत्सवों का भव्य और व्यवस्थित आयोजन करना तथा समाज में सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वातावरण को मजबूत करना है. नई कार्यकारिणी में शामिल प्रत्येक सदस्य को जो जिम्मेदारी दी गई है, उसका निर्वहन निष्ठा, अनुशासन और समर्पण के साथ किया जाना चाहिए.

निकली पोषण जागरूकता रैली

'हमारी आंगनबाड़ी हमारी जिम्मेदारी' का दिया संदेश

नवभारत न्यूज

सलामतपुर, 9 सितंबर. रायसेन जिले में कुपोषण के खिलाफ जंग को मजबूत करने और जन-समुदाय को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से बुधवार को दीवानगंज में पोषण जागरूकता रैली का आयोजन किया गया.

9 सितंबर से 8 अक्टूबर तक संचालित होने वाले 9वें राष्ट्रीय पोषण माह अभियान के अंतर्गत आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर यह पहल की. रैली के जरिए क्षेत्र के नागरिकों, विशेषकर महिलाओं और परिवारों को सही पोषण, स्वच्छता और बच्चों के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया.इस वर्ष आयोजित हो रहे राष्ट्रीय पोषण माह की मुख्य थीम 'हमारी आंगनबाड़ी हमारी जिम्मेदारी' तय की गई है. इसी केंद्रीय संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए रैली में शामिल आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया. हाथों में तख्तियां और बैनर लिए कार्यकर्ताओं ने गांव की प्रमुख गलियों और चौराहों से गुजरते हुए गूंजायमान नारों के माध्यम से लोगों का ध्यान आकर्षित किया. उन्होंने संतुलित, स्थानीय और पौष्टिक आहार के नियमित सेवन के महत्व को रेखांकित किया.

रैली के दौरान कार्यकर्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि बच्चों के शुरुआती 1,000 दिनों का पोषण उनके जीवनभर के शारीरिक और मानसिक विकास की नींव रखता है. इसके साथ ही गर्भवती महिलाओं और धात्री माताओं (स्तनपान कराने वाली माताओं) के आहार में हरी सब्जियां, फल, दालें और आयरन-फॉलिक एसिड की गोलियों के समावेश को अनिवार्य बताया गया.

सखी शाम ढलते ही सांची नगर की सड़कों पर पुलिस की गश्त

पुलिस की सतर्कता से अपराधियों पर अंकुश

नवभारत न्यूज

सांची, 9 सितंबर. नगर में अपराध एवं अनैतिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस की सक्रियता लगातार दिखाई दे रही है.

शाम होते ही पुलिस का फ्लैगमार्च एवं गश्त शुरू हो जाती है, जो देर रात तक नगर के प्रमुख मार्गों, चौराहों, सार्वजनिक स्थलों और संवेदनशील क्षेत्रों में जारी रहती है. पुलिस की इस लगातार सक्रियता से आपराधिक गतिविधियों में लिप्त लोगों के हौसले पस्त होते दिखाई दे रहे हैं.

जानकारी के अनुसार पुलिस की सख्त कार्यप्रणाली के चलते नगर सहित आसपास के क्षेत्र में जुआ-सट्टा जैसी गतिविधियों पर काफी हद तक अंकुश लगा है. पुलिस ने अपने मुखबिर तंत्र को भी सक्रिय कर दिया है, जिसके चलते संदिग्ध गतिविधियों की सूचनाएं पुलिस तक पहुंच रही हैं. जिला पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के सख्त निर्देशों के बाद पुलिस लगातार चौकसी बरत रही है. बताया जाता है कि पूर्व में नगर एवं आसपास के क्षेत्रों में जुआ-सट्टे के कई अड्डे सक्रिय रहते थे, लेकिन पुलिस द्वारा लगातार छापेमारी कर कार्रवाई किए जाने तथा प्रकरण दर्ज करने से जुआरियों और सट्टा कारोबारियों में पुलिस का भय बढ़ा है. वहीं, अवैध शराब के कारोबार के खिलाफ भी पुलिस द्वारा सख्ती बरती जा रही है. मोबाइल और ऑनलाइन माध्यमों के बढ़ते दौर में भले ही सट्टे की गतिविधियों के नए तरीके सामने आ रहे हों, लेकिन पुलिस की निगरानी और मुखबिर तंत्र के चलते ऐसी गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है.

रातभर गूंजता है पुलिस वाहन का सायरन

नगर में पुलिस की रात्रि गश्त भी तेज कर दी गई है. रात के समय पुलिस वाहनों के सायरन की आवाज नगर में सुनाई देती रहती है. पुलिस द्वारा अनजान एवं संदिग्ध लोगों से पूछताछ के साथ ही संवेदनशील स्थानों पर निगरानी की जा रही है. रेलवे स्टेशन, प्रमुख चौराहे, सार्वजनिक स्थल और सुनसान क्षेत्रों के साथ-साथ रात्रि में श्मशान घाट जैसे स्थानों पर भी पुलिस की नजर बनी हुई है.

अनेक रूप धरकर बहरूपिया कर रहे मनोरंजन

डिजिटल युग में भी थमी नहीं बहरूपिया कला

नवभारत न्यूज

सलामतपुर, 9 सितंबर. आधुनिकता की तेज़ रफ्तार, हर हाथ में थमे स्मार्टफोन, हाई-स्पीड इंटरनेट और टेलीविजन के इस मायावी दौर में जहां पारंपरिक लोककलाएं धीरे-धीरे गुमनामी के अंधेरे में खोती जा रही हैं, वहीं कुछ ऐसे भी फनकार हैं जो इस ढलती शाम में भी कला का चिराग रोशन किए हुए हैं.

राजस्थान के निवासी इंसाफ खान पिता पप्पू खान एक ऐसा ही नाम हैं, जो अपनी पुश्तैनी 'बहरूपिया कला' को बचाने के लिए दर-दर की खाक छान रहे हैं. वे गांव-गांव घूमकर न सिर्फ तरह-तरह के स्वांग रचते हैं, बल्कि आधुनिक मनोरंजन के शोरगुल के बीच पारंपरिक लोक संस्कृति का जादू भी बिखेरते हैं.

वर्तमान में इंसाफ सलामतपुर थाना क्षेत्र के अंबाडी गांव में अपनी टोली के साथ डेरा डाले हुए हैं. वे हर दिन एक नया रूप, एक नया किरदार और एक नई कहानी लेकर ग्रामीणों के बीच पहुंचते हैं, जिसे देखकर बूढ़े, बच्चे और महिलाएं सभी आश्चर्यचकित और आनंदित हो उठते हैं. इंसाफ बताते हैं कि उनका परिवार मप्र में पिछले चार पीढ़ियों से इस कला का प्रदर्शन कर रहा है. वे करीब 10 सदस्यों के अपने पूरे कुनबे के साथ यात्रा करते हैं. किसी भी एक गांव में उनका पड़ाव लगभग 10 दिनों का होता है. इन 10 दिनों में इंसाफ खान कभी पौराणिक पात्र 'रावण' और 'शूर्पणखा' के रूप में प्रकट होते हैं, तो कभी रहस्यमयी 'जींद' या ठेठ 'आदिवासी' की वेशभूषा धारण कर लोगों के सामने आ खड़े होते हैं.